 Roll No. ……..

MASL–103

भारतीय दर्शन

एम. ए. संस्कृत (एमएएसएल–12 / 16 / 17)

प्रथम वर्ष, सत्र 2017

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. सांख्यकारिका के अनुसार प्रकृति के स्वरूप का वर्णन करते हुए उसको सिद्ध कीजिए।
2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए—

   (क) दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ।
   दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात् ॥

   (ख) प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।
   अन्योन्याभिभवाश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः ॥

(ग) जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव॥

3. वेदान्तसार के अनुसार कर्म के स्वरूप पर भेद सहित प्रकाश डालिए।
4. तर्कभाषा के अनुसार त्रिविध कारणों का विवेचन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. सांख्यकारिका के अनुसार त्रिविध गुणों के स्वरूप का विवेचन कीजिए।
2. सांख्यकारिका के अनुसार व्यक्त तत्वों को विस्तारपूर्वक समझाइए।
3. वेदान्तसार के अनुसार अज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसकी 'आवरणशक्ति' पर प्रकाश डालिए।
4. वेदान्तसार में वर्णित 'सूक्ष्म शरीर' के सिद्धान्त का विवेचन कीजिए।
5. तर्कभाषा में वर्णित प्रमेय पदार्थों को स्पष्ट कीजिए।
6. तर्कभाषा के अनुसार अनुमान प्रमाण का भेदोपभेदपूर्वक विवेचन कीजिए।
7. जैन दर्शन के अनुसार 'सत्' वस्तु की परिभाषा देते हुए उसका स्वरूप विश्लेषण कीजिए।

8. चार्वाक दर्शन की आत्मा या चेतना विषयक अवधारणा को स्पष्ट करते हुए संक्षेप में चार्वाक दर्शन की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सही उत्तर का चयन कीजिए :

1. द्वैताद्वैतवाद के प्रवर्तक कौन हैं ?
   (क) आचार्य रामानुज
   (ख) आचार्य मध्व
   (ग) आचार्य निम्बार्क
   (घ) आचार्य शङ्कर

2. सांख्यकारिका के अनुसार दुःख के कितने भेद हैं ?
   (क) तीन
   (ख) चार
   (ग) पाँच
   (घ) छः

3. ईश्वरकृष्ण रचनाकार हैं—
   (क) वेदान्तसार के
   (ख) तर्कभाषा के
   (ग) सांख्यकारिका के
   (घ) योगसूत्र के

4. सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति तत्त्व है—
   (क) चेतन रूप
   (ख) अचेतन रूप
   (ग) चेतनाचेतन रूप
   (घ) इन में से कोई नहीं

5. न्याय दर्शन अनुमान प्रमाण हेतु किसे अनिवार्य मानता है ?
   (क) औपाधिक सम्बन्ध को
   (ख) हेत्वाभास को
   (ग) व्याप्ति सम्बन्ध को
   (घ) इनमें से कोई नहीं

6. 'स्पर्श' विशेष गुण है—
   (क) त्वगिन्द्रिय का
   (ख) चक्षुरिन्द्रिय का
   (ग) घ्राणेन्द्रिय का
   (घ) रसनेन्द्रिय का

7. अज्ञान की शक्ति के कितने प्रकार हैं ?
   (क) दो
   (ख) तीन
   (ग) चार
   (घ) आठ

8. 'वेदान्तसार' के रचयिता हैं—
   (क) शंकराचार्य
   (ख) सदानन्द
   (ग) महर्षि कपिल
   (घ) महर्षि कणाद

9. जैन दर्शन में मोक्ष का अर्थ है—
   (क) आवागमन से मुक्ति
   (ख) दीप का बुझना
   (ग) जीव का कर्मपुद्गलों से वियोग
   (घ) इनमें से कोई नहीं

10. चार्वाक एकमात्र प्रमाण मानता है—
   (क) प्रत्यक्ष को
   (ख) अनुमान को
   (ग) उपमान को
   (घ) शब्द को